DME

Affiliated to GGSIPU, New Delhi & Approved by Bar Council of India

GURU GOBIND SINGH INDRAPRASTHA UNIVERSITY

Certificate

ICAN 2018

This is to certify that

Mr./Ms./Dr. Vijay Sharma

has participated / presented his / her research paper on

टीवी समाचारों में रिक्रिएशन : ज़रूरत और जोखिम

in the

International Conference on India and Changing Aspects of News (ICAN 2018), *held on* 10th March, 2018.

at Delhi Metropolitan Education, Noida.

Prof. (Dr.) Susmita Bala	Prof. (Dr.) Bhavish Gupta	Hon'ble Mr. Justice Bhanwar Singh	Mr. Aman Sahni
HOD - DME Media School	Director (Officiating)	(Former High Court Judge)	Vice Chairman
Convener - ICAN 2018	DME	Director General, DME	DME

PARTNER: UNESCO New Delhi Office, Cluster Office for Bangladesh, Bhutan, India, Maldives, Nepal and Sri Lanka; United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization

KNOWLEDGE PARTNER: INDIAN INSTITUTE OF MASS COMMUNICATION NEW DELHI

STRATEGIC PARTNER: C·O·L CEMCA

POWERED BY: indiatoday in EDUCATION

भाग–2

वेब मीडिया और सोशल मीडिया

8. युवा सोशल मीडिया यूजर्स की सामाजिक बदलाव में भूमिका 85
सुमित कुमार पांडे

9. वेब मीडिया में अध्यात्म का बढ़ता स्पेसः समीक्षात्मक अध्ययन 99
डॉ. सुखनंदन सिंह

10. युवाओं का सोशल मीडिया में बढ़ता रुझानः एक अध्ययन 107
राहुल जोशी

11. धार्मिक पत्रकारिता के संदर्भ में समाचारपत्रों का प्रबन्धनात्मक अध्ययन 114
आशुतोष कुमार दूबे

12. फेक न्यूज और सामाजिक प्रभाव 121
सुमन

13. डिजिटल दुनिया में फर्जी खबरों का बढ़ता दायरा 128
कमल पंत

भाग–3

मीडिया रिपोर्टिंग और मीडिया ट्रायल

14. मीडिया ट्रायलः एक विश्लेषण 135
डॉ. गजेन्द्र प्रताप सिंह

15. खोजी पत्रकारिता आधारित समाचार–हाल के वर्षों में बदला स्वरुप और चुनौतियां 143
कंचन रस्तोगी

16. खोजी पत्रकारिताः समाचार प्राप्ति की एक महत्वपूर्ण विधा 151
डॉ. विनोद कुमार पांडेय

17. टीवी समाचारों में रिक्रिएशनः जरूरत और जोखिम 158
विजय शर्मा

18. पाक उर्दू समाचारपत्रों का अंतर्वस्तु विश्लेषण 170
एस.बी. खान

19. गुजरात विधानसभा चुनाव 2017 के संदर्भ में चार राष्ट्रीय समाचारपत्रों का विषयवस्तु विश्लेषण 183
आदित्य ओझा एवं डॉ. राजेश अग्रवाल

20. छत्तीसगढ़ की ग्रामीण पत्रकारिताः संघर्ष और संवेदनशीलता 200
डॉ. सर्वेश दत्त त्रिपाठी

21. मीडिया रिपोर्टिंगः नया दौर, नई चुनौतियां, नए खतरे 212
डॉ. कपिल शर्मा एवं हेमंत कौशिक

भाग–4

मीडिया, समाज और हिन्दी सिनेमा

22. जेलें, मीडिया और समाज 221
डॉ. वर्तिका नन्दा

23. सिनेमा और समाज में अंतरसम्बन्धः हिन्दी सिनेमा के विशेष संदर्भ में 231
संध्या कर

24. हिन्दी सिनेमा में गाँव 241
राहुल कुमार

लेखक परिचय 253

बदलते दौर की पत्रकारिता

संपादक
डॉ. सुस्मिता बाला

17

टीवी समाचारों में रिक्रिएशनः जरूरत और जोखिम

विजय शर्मा

पुनर्निर्माण या पुनर्रचना। मीडिया में ये ट्रेंड पुराना है। चाहे अपराध आधारित पत्रिकाओं में किसी सच्ची घटना को कहानी के रूप में पेश करना हो या टीवी चैनलों में अपराध, आतंकवाद और रहस्य या ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित रिपोर्ट में नाट्य रूपांतरण का सहारा लेना हो। दरअसल, देखा जाए तो प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल फार्मेट में सामने आया कोई भी समाचार पहले कच्चा, सादा और फीका ही होता है लेकिन पाठक, श्रोता या दर्शकों को आकर्षित करने के लिए उसे संबधित माध्यम में उपलब्ध तकनीक आदि के मुताबिक माजकर–सजाकर प्रस्तुत किया जाता है। "जिस तरह नाटकों का मंचन परफॉर्मेंस आर्ट हो गया उसी तरह समाचारों की प्रस्तुति परफोरमेंस जर्नलिज्म हो गई है। हम समाचारों को मंचित करने लग गए हैं।" दरअसल, एकर–रिपोर्टर का नाटकीय उच्चारण हो या फिर पैकेज में ग्राफिक्स, वॉयस ओवर के जरिए भरी गई नाटकीयता सब दर्शकों को खींचने–रोकने का ही उपक्रम है और कई बार ऐसा करते वक्त समाचार अपने मूल कथ्य–संदेश से भी भटक जाता है। चूकि टीवी कई माध्यमों का संगम है इसलिए जहां समाचार में सनसनी भरने या उभारने की जरूरत हो वहां नाट्य रूपांतरण का ज्यादा प्रयोग होता है। हालाकि हाल के वर्षों में कुछ ऐसे भी कार्यक्रम लोकप्रिय हुए जिनमें नाट्य रूपांतरण के सहारे एक निश्चित कालखंड को सहजता से उकेरा गया।

प्रस्तावित शोध–पत्र "टीवी समाचारों में रिक्रिएशनः जरूरत और जोखिम" में हम समाचारों के पुनर्निर्माण के प्रचलन का वर्णन देने के बाद विश्लेषण करेंगे

कि आखिर इसके प्रयोग से संचार और समाचारों की तथ्यपरकता, संतुलन और निष्पक्षता–वस्तुनिष्ठता पर क्या–क्या असर हो सकते हैं। शोध पत्र में विभिन्न समाचार चैनलों के कार्यक्रमों में नाट्य रूपांतरण का विषयवस्तु विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही इस कार्य विशेष से जुडे मीडिया कर्मियों, निर्देशकों, समाज शास्त्रियों, मनोविश्लेषकों और विशेषज्ञों की विशेषज्ञीय टिप्पणी भी शामिल होगी।

अध्ययन का उद्देश्य

- प्रस्तुत शोध–पत्र में हम विश्लेषण करेंगे कि समाचारों में नाट्य रूपांतर के प्रयोग की आवश्यकता कितनी है ?
- इसके प्रयोग से जुडे क्या–क्या जोखिम हैं?
- इसका संचार और समाचारों की तथ्यपरकता, संतुलन और निष्पक्षता वस्तुनिष्ठता पर क्या–क्या असर पडता हैं?
- क्या नाट्य रूपांतर टीवी स्क्रीन पर महज टीआरपी जुटाने का चालू फॉर्मूला भर है या इसका इस्तेमाल किसी मजबूरी से भी जुड़ा है ?
- क्या नाट्य रूपांतर से पुलिस की जांच को सही दिशा दिलाने, आरोपी को कानून के कटघरे तक लाने और पीडित को न्याय दिलाने पर भी कोई असर पड़ता है? या फिर उल्टा कुछ लोग अपराध के तरीके (मोडस ऑपरेंडी) भी सीख जाते हैं और जुर्म कर बैठते हैं ?
- इसके साथ ही हम ये भी खोज करेंगे कि नाट्य रूपांतर के विकल्प के रूप में क्या–क्या तकनीक अपनाई जा सकती है ?

संदर्भित सामग्री की समीक्षा

सामान्यतः उपलब्ध पुस्तकों, शोध–पत्रों अथवा लेखों में नाट्य रूपांतर को सिर्फ क्राइम शोज से जोडकर देखा गया है। ये बात ठीक है कि नाट्य रूपांतर का ज्यादा प्रयोग क्राइम शोज मे ही होता है लेकिन कई बार ऐसा भी हुआ है जहा किसी सच्ची घटना के नाट्य रूपातर को ना सिर्फ पूरी फिल्म का रूप दिया गया बल्कि क्राइम से हटकर अन्य विषयों पर भी रिक्रिएशन का सफल प्रयोग हुआ। इतना ही नहीं विकल्प के तौर पर दूसरे साधनों का भी सफल उपयोग किया गया। जाहिर विषय के इन पक्षों पर शोध पत्र, पुस्तकों और यहा तक कि लेखों का अभाव बना हुआ है। संभवतः यही वजह है कि नाट्य रूपांतर के प्रयोग से जुड़े तमाम पहलुओं पर न्यूज चैनल के संपादकों, मीडिया समीक्षकों, समाज विज्ञानियों और मनोविज्ञान विशेषज्ञों की उदासीनता बनी हुई है। इस विषय पर टीवी न्यूज चैनलों के नियमन–नियंत्रण से जुडी सरकारी–गैरसरकारी

प्रस्तावना

41

दिव्यांग मीडियाकर्मियों के समक्ष चुनौतियां: एक विश्लेषण

विजय शर्मा। रिसर्च स्कॉलर। पत्रकारिता एवं जनसंचार। मेवाड़ विश्वविद्यालय

सार: प्रस्तुत शोध पत्र मीडिया के क्षेत्र में कार्य कर रहे दिव्यांगों पर केंद्रित है । क्या दिव्यांग मीडियाकर्मी मीडिया के पेशे से खुश हैं ? क्या प्रबंधन उनके अधिकारों और आवश्यकताओं के लिए जागरूक और सहयोगी की भूमिका है ? क्या देश–दुनिया तक शोषण, असमानता, अपराध, राजनीतिक उठापटक के समाचारों के प्रसार से जुड़े होने जैसे दायित्वपूर्ण बौद्धिक कार्य के बावजूद वो अपने अधिकारों की रक्षा कर पा रहे हैं ? क्या दिव्यांगों की प्राथमिक आवश्यकता अर्थात निर्बाध विचरण के अधिकार तक से वो वंचित हैं ? क्या न्यूज रूम में उनसे सामान्य कर्मचारी की तरह व्यवहार हो रहा है ? इस क्षेत्र विशेष में करियर बनाने के लिए दिव्यांगों के सामने क्या–क्या चुनौतियां हैं । ये और ऐसे कई सवालों का जवाब तलाशने के लिए हमने कुछ दिव्यांग मीडियाकर्मियों से बातचीत की। प्रस्तुत शोध पत्र में टीवी न्यूज रूम में कार्यरत विशेष रूप से दो मीडियाकर्मियों की केस स्टडी के माध्यम से विश्लेषण किया गया है ।

कुंजीशब्द: दिव्यांग मीडियाकर्मी, अधिकार, न्यूज रूम, करियर, चुनौतियां, केस स्टडी

प्रस्तावना

'भारत का संविधान अपने सभी नागरिकों के लिए समानता, स्वतंत्रता, न्याय व गरिमा सुनिश्चित करता है और स्पष्ट रूप से यह विकलांग व्यक्तियों समेत एक समुत्त समाज बनाने पर जोर डालता है। हाल के वर्षों में विकलांगों के प्रति समाज का नजरिया तेजी से बदला है। यह माना जाता है कि यदि विकलांग व्यक्तियों को समान अवसर तथा प्रभावी पुनर्वास की सुविधा मिले तो वे बेहतर गुणवत्तापूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं। भारत में करीब 1.34 लाख दिव्यांग रोजगार प्राप्त करने की उम्र के हैं लेकिन उनमें से सिर्फ एक तिहाई दिव्यांगों को ही रोजगार में शामिल किया गया है । इस आंकड़े में 98 लाख ऐसे शिक्षित दिव्यांग भी शामिल हैं जो नौकरी हेतु तैयार हैं लेकिन ज्यादातर रोजगार विहीन हैं ।

इंडोनेशिया की 40 वर्षीय दिव्यांग महिला फोटोग्राफर कसिदाह बादा[...]

मीडिया आज देश का सबसे तेजी से बढ़ता हुआ उद्योग है । समाचार–पत्र, रेडियो, टीवी से लेकर डिजिटल मीडिया में हजारों–लाखों की तादाद में मीडियाकर्मी कार्यरत हैं । 90 के दशक के भूमंडलीकरण और सूचना क्रांति के बाद से उस उद्योग में जबरदस्त विस्तार हुआ है । जाहि[...] नौकरियों के लिए भी दरवाजे खुले और मीडिया में रिपोर्टिंग, एंकरिंग, कॉपी राइटिंग, वीडियो संपादन, ग्राफिक्स, कैमरा आदि से ले[...] संविदा पर सेवा उपलब्ध करने वाले पेशेवरों को भारी संख्या में काम मिला। जाहिर है, कई पेशेवर ऐसे भी रहे जो शरीर के किसी एक अंग[...] अक्षम होने के बावजूद रचनात्मक और व्यवसायिक कौशल में बाकी लोगों के बराबर थे । ऐसे कुछ दिव्यांग मीडियाकर्मियों को काम तो मि[...] गया लेकिन बौद्धिक, रचनात्मक और आजीविका से जुड़ी आवश्यकताओं के हिसाब से सुविधाएं और अवसर समवतरू उतने नहीं [...] जिसके वो हकदार हैं । शायद यही वजह रही कि दिव्यांग मीडियाकर्मियों की संख्या अन्य क्षेत्रों के मुकाबले आज भी बेहद कम है । मैं [...] मुख्यधारा के मीडिया में दो दशक गुजार चुका हूं लेकिन मेरी जानकारी और संपर्क में भी चंद दिव्यांग मीडियाकर्मी ही आ सके ।

मीडिया संस्थानों में दिव्यांग

चूंकि पत्रकारिता, विशेषकर टीवी पत्रकारिता एक विशेष कार्य है जिसमें रचनात्मक सोच के साथ ही कड़ी मेहनत और मेधा की जरूरत हो[...]

ISSN 2277 35[...]

[...] इस चुनौती का स्वीकार कर मीडिया का हिस्सा बनता है तो उसे विशिष्ट दर्जा वैसे ही मिल जाना [...] कि 'आमतौर पर बाहर ये धारणा है कि टीवी न्यूज चौनलों में पत्रकारों की नियुक्ति के बावजूद उन्हें बहुत [...] एक बहुत बड़ा मिथक है। सच ये है कि चुनिंदा चौनलों को छोड़ दिया जाए तो 80 फीसदी न्यूज चौनलों [...] काम की परिस्थितियां भी बहुत दमघोंटू हैं। जाहिर है दिव्यांग टीवी पत्रकार इससे अलग नहीं हैं और जब [...] परिस्थितियों से भी सामना हो तो स्थिति असहज हो जाती है । मीडियाकर्मी भी एक इंसान है और अगर वो [...] की तरह रचनात्मक माहौल, प्रोत्साहन, तरक्की और सहूलियतों की जरूरत है अन्यथा उसका विकास [...] आर्थिक जरूरतें पूरी करनी है और भविष्य बनाना है । क्या ये हक सिर्फ गैर–दिव्यांगों को ही मिलता रहेगा ? [...] कर्मचारी को हाशिये पर रख दिया जाए तो उनकी आवाज को धार कैसे मिलेगी ? जबकि ये सच है कि [...] है उसने कौशल सिद्ध किया है । हमारे बीच कई उदाहरण हैं ।

[...] दिव्यांग मीडियाकर्मी एच. रामाकृष्णन

चेन्नई के एच. रामाकृष्णन को ही लीजिए । ढाई साल की उम्र में उन्हें दोनों पैर में पोलियो हो गया । स्कूल में दाखिले से लेकर नौकरी तक के लिए संघर्ष करना पड़ा । आखिरकार उन्हें पत्रकारिता में नौकरी मिली जिसके बाद वो दूरदर्शन और आकाशवाणी के साथ भी समाचार वाचक के रूप में जुड़े । उन्होंने 40 साल तक शानदार काम किया और बाद में एक म्यूजिक टीवी चौनल के सीईओ बने । तमिल, मलयालम, हिंदी और अंग्रेजी के अलावा वो जर्मन भाषा के भी जानकार हैं । वो एक संगीतकार भी हैं और कई मंचों पर अपना जौहर दिखा चुके हैं ।

इसी तरह दो साल पहले 11 साल के दृष्टिबाधित टी. श्रीरामानुजन को तमिल न्यूज चौनल लोटस न्यूज टुडे ने न्यूज एंकर बनने का मौका दिया था । श्रीरामानुजन ने ब्रेल लिपि की मदद से पहलीबार 22 मिनट तक स्पेशल लाइव [...] न्यूज बुलेटिन में नेपाल के भूंकप का फॉलोअप और महिंदा राजपक्षे का ट्रायल भी शामिल था। चौनल के [...] मौका दिए जाने का प्रमुख मकसद था लोगों [...] करना और उन्हें इसके बारे में जागरूक [...] से नियमित एंकरिंग करवाई गई ।

ब्रेल लिपि की मदद से टीवी पर लाइव न्यूज पढ़ते टी. श्रीरामानुजम

[...] श्रीरामानुजम की तरह कई दिव्यांग मीडियाकर्मी हैं [...] टीवी के लिए काम कर रहे हैं । कुछ समय पहले [...] की रचनात्मक प्रतिभा कौशल को उन्नत करने [...] और कौशल विकास की योजना लागू की है जिसके [...] और डिजिटल न्यूज रूम का हिस्सा बनाया जा रहा

[...] इस से 50 हजार नियमित श्रोता हैं

पंजाब में 2014 सो 'उड़ान' नाम का एक कम्युनिटी रेडियो स्टेशन दृष्टिबाधित नौजवानों की टीम अपने सीमित संसाधनों से चला रही है ।

दरअसल, किसी व्यक्ति के शरीर का एक–दो हिस्सा काम ना करे तो उसके पूरे शरीर को अक्षम मान लेने की सोच समाजविरोधी है । अगर ऐसा होता तो दिव्यांग तमाम पेशेवर क्षेत्रों में अपनी क्षमता का लोहा ना मनवा रहे होते । फिर पत्रकारिता इससे पृथक क्यों ? खैर....

मीडिया में कार्यरत दिव्यांगों की स्थिति को समझने के लिए हमने दिल्ली–एनसीआर के दो दिव्यांग मीडियाकर्मियों से बात की । दोनों अलग–अलग टीवी न्यूज चौनल के लिए काम करते हैं और उज्जवल भविष्य बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं ।

[...] टीवी समाचार प्रसारण का इतिहास तीन दशक से ज्यादा का नहीं है और दो दशक पहले सरकारी नीति में उदारता [...] तेजी आई थी । तब एक के बाद एक दसियों चौनल जनता से रूबरू हुए थे और लगभग तभी से ज्त्क के टॉप टेन में

36	भारतीय मीडिया, मीडिया नियामक प्राधिकरण और दिव्यांग एक समालोचना डॉ. नीरज कर्ण सिंह	172
37	Globalization of Media and its Impact on Education *Rajnish Kumar Singh*	175
38	Social Media: Online and Offline Social Participation among People with Divyang in North Bihar Dr. Gopal Thakur	178
39	सामाजिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं खेल जगत में दिव्यांगों की भूमिका कुंवर दीप सिंह	183
40	Relationship between Data Mining and Privacy Aashita Chhabra, Teena K. Bhatia	186
41	दिव्यांग मीडियाकर्मियों के समक्ष चुनौतियां: एक विश्लेषण विजय शर्मा	188
42	Surrogacy & Films: Cinema is Educating 'Not-able' Couples Shikha Sharma, Charu Chandra Pathak	192
43	Challenges for Divyangs in Education in Digital India Ayushi Sachdeva, Nehal Solanki	197
44	Impact of Humor on Advertisement Manya Jain, Shagun Bakshi	203
45	Digitalization: A Key Success of Green HRM Pooja Sharma, Dr. Anupama Lakhera	208
46	Information Needs of Visuallly Impaired and Physically Challenged Users in University Libraries of Lucknow Junaid Rayini, Pratibha Shukla	212
47	Media as a Catalyst for Empowering Divyangs Anamika Srivastava	218
48	Media & Disability: a theoretical approach towards building Disability Community Dr. J.K.Panda	222

ISSN 2277-3932

JAN SANCHAR VIMARSH

जन संचार विमर्श

A BI-LINGUAL MEDIA RESEARCH JOURNAL

A Special Issue for INC on Divyangs and PMG: A Global Media Perspective

Knowledge Partner

Indian Institute of Mass Communication

PUNERUTTHAN
Serving Needy People

ishaan
ARTS AND PRODUCTION

Patron
Sh. K. G. Suresh

Chief Editor
Dr. Sandeep Kumar Srivastava

Editor
Dr. Dilip Kumar
Dr. Suresh Chandra Nayak
Rahul Mittal
Anil K Jharotia

शामिल एक प्राइवेट हिन्दी न्यूज चैनल में सेवा दे रहे हैं दिव्यांग मीडियाकर्मी कृष्णा । उन्होंने अपने अनुभव साझा किए । 38 वर्ष के इस नौजवान के मुताबिक बढ़ती प्रतिस्पर्धा की वजह से टीवी न्यूज स्क्रीन का कलेवर और न्यूजरूम के नजारे तो बदले हैं लेकिन नजरिए में कोई खास फर्क नहीं आया है । किसी दिव्यांग मीडियाकर्मी को कोई जिम्मेदारी सौंपने से कतराना आम है और अगर किसी सुलझे हुए सीनियर ने कोई बड़ा काम सौंप दिया तो उसके फैसले पर कानाफूसी करने वाले कम नहीं होते । उनके मुताबिक और अवसर की बात आते ही इस कथित पेशेवर क्षेत्र में भी गुटबाजी, चापलूसी टांगखिंचाई जैसी दकियानूसी चीजें हावी दिखाई देती हैं और सही व्यक्ति अवसर से वंचित जाता है भले ही वो कोई दिव्यांग ही क्यों ना हो । अब तक 3 चैनलों में काम कर प्रोड्यूसर कृष्णा के मुताबिक दिव्यांगों को रैंप भले ही थोड़ा बाद में मिले लेकिन पहले अवसर देना ज्यादा जरूरी है। वो बताते हैं कि किस तरह एक नामी न्यूज चैनल में सेलेक्शन के बाद भी किन्हीं अज्ञात कारणों की वजह से अंतिम समय में ज्वाइन करवाया गया । इसी तरह एक चैनल में शो के प्रसारण से ठीक एक दिन पहले नेटवर्क से जुड़े कम्प्यूटर में सहेज कर रखे गए शो से जुड़े वीडियो एक साथी कर्मचारी ने जानबूझकर डिलीट कर दिए क्योंकि वो इस शो के एंकर भी थे । कृष्णा इस बात से आहत हैं कि कोई दिव्यांग किसी पेशे में अपने कौशल की वजह से सहकर्मियों के मुकाबिल आ खड़ा होता है तो कुछ लोग सहयोग की बजाय अलग–थलग करने की गुपचुप मुहिम छेड़ देते हैं । वो सवाल करते हैं कि क्या किसी दिव्यांग को आगे बढ़ने का हक नहीं है ? तमाम कड़वे अनुभवों के बाद भी इंडिया न्यूज आकर कृष्णा खुश हैं और चैनल के लिए कुछ कर गुजरने के जज्बे से भरे हुए हैं ।

इंडिया न्यूज में कार्यरत दिव्यांग प्रोड्यूसर कृष्णा

केस स्टडी 2

हमारे विश्लेषण के दूसरे सहभागी हैं राज्यसभा टीवी में जूनियर रिपोर्टर के पद पर कार्य कर रहे मानिक मिश्रा । मानिक मीडिया में अपेक्षाकृत नये हैं और भारतीय जनसंचार संस्थान के 2014–15 के प्रशिक्षु रहे हैं । 75 प्रतिशत सेरेबल पाल्सी से प्रभावित मानिक कैंपस इंटरव्यू के जरिए राज्यसभा टीवी की संपादकीय टीम का हिस्सा बने और पिछले डेढ़ साल से सेवारत हैं ।

मानिक के मुताबिक मीडिया दौड़–भाग का काम है और टीवी न्यूज चैनल के न्यूज रूम में भी खासी चहल–पहल रहती है । मानिक का काम ऑन एयर होने वाली कुछ खबरों की कॉपी लिखने तक सीमित है । वो स्वीकार करते हैं कि कोई उनका हाथ पकड़कर काम नहीं सिखा सकता और इसके लिए उन्हें खुद से प्रयास करना होगा । शारीरिक विवशताओं की वजह से वो एक जगह बैठकर ही काम करते हैं जिसकी वजह से टीवी न्यूज प्रोडक्शन या पैकेजिंग के काम में पारंगत होने में उन्हें दिक्कत आ रही है । उनके मुताबिक चैनल सरकारी है, सीनियर्स और सह–कर्मी पूरा सहयोग करते हैं, सुविधाओं की दिक्कत भी नहीं है जो शायद प्राइवेट चैनल में कम मिलती । किसी का नाम न लेते हुए मानिक कहते हैं कि दरअसल कुछ लोगों ने कहा था कि आप मीडिया में काम नहीं कर सकते और फिर इसी बात को उन्होंने चुनौती की तरह लिया था । मानिक के मुताबिक आर्थिक रूप से सशक्त होने का अधिकार सबको है क्योंकि हर इंसान सम्मानजनक जीवन जीना चाहता है । मानिक फिलहाल इन दिनों अपना लेखन कौशल बढ़ाने के लिए विशेष परिश्रम कर रहे हैं और अत्यंत आशान्वित हैं । मानिक को शिकायत है कि दिव्यांगों के निर्बाध आवागमन को लेकर लोगों की सोच अब भी परिपक्व नहीं है । कहीं रैंप आधे–अधूरे बनवाए जाते हैं तो कहीं लिफ्ट तक पहुंचने के लिए सामने सीढ़ियां होती हैं । बाजार या किसी और सार्वजनिक स्थान में सुगम आवागमन तो सपने जैसा है । मानिक भी कहते हैं कि दिव्यांग को सबसे ज्यादा खुशी अपने पैरों पर खड़े होने में होती है और सरकार को इस दिशा में सबसे ज्यादा ठोस प्रयास करने चाहिए ।

राज्यसभा टीवी में कार्यरत दिव्यांग मानिक मिश्रा

बायें मिमिक्री करते डॉनल्ड ट्रंप, दायें दिव्यांग पत्रकार सर्ज कोवालेस्की

ISSN: 2277 39

... की सोच में अपाहिजपन अक्सर जमीन से लेकर जुबान तक जाहिर होता रहता है । दो साल पहले अपने ... ट्रंप ने जनसभा में अर्थोग्रुपोसिस नाम की बीमारी से जूझ रहे न्यूयॉर्क टाइम्स के नामी दिव्यांग प्रेस रिपोर्टर ... खिल्ली उड़ाई थी जिसकी दुनिया भर में आलोचना हुई । ट्रंप ने कोवालेस्की की 2001 की एक रिपोर्ट का ... । ट्रंप बाद में राष्ट्रपति बने और अब इन दिनों उन पर ही देश के कल्याण की जिम्मेदारी है ।

... निजी टेलिविजन चैनलों के दफ्तर में विकलांगों के लिए बाधारहित मार्ग की अपेक्षाकृत कम व्यवस्था है ... मीडियाकर्मियों की नियमित वेतन बढ़ोत्तरी, पदोन्नति और कौशल विकास प्रशिक्षण पर कम ध्यान दिया जा...

... आवागमन, रोजगार, प्रशिक्षण और आर्थिक प्रगति से जुड़े दायित्व कॉरपोरेट कंपनियों की रूल बुक में शामिल ...

... मीडियाकर्मी को भी उसके बौद्धिक–रचनात्मक कौशल के मुताबिक न्यूज बुलेटिन, टॉक शो व अन्य कार्यक्रमों का ...

... दिव्यांगों को एक सक्रिय और पेशेवर कर्मचारी माना जाए ताकि उन्हें 'रोजगार सुरक्षा' का एहसास हो सके ... समाज की मिलीजुली जिम्मेदारी है और निजी मीडिया कंपनियों को भी इस जिम्मेदारी से सीधे जुड़ना चाहिए ... उद्योग में अगले पांच साल में 7 से 8 लाख नये रोजगार अवसर सृजित होने की उम्मीद है और इस दौरान ... रहेगी। बढ़ती ग्रामीण मांग और बदलते कारोबारी मॉडल को देखते हुए इस उद्योग को खुद को पूरी तरह ... करना होगा ।

... की जरूरत पड़ेगी और अगर अभी से प्रयास किये जाएं तो दिव्यांगों को भी विशेष प्रशिक्षण देकर मीडिया में ... जा सकती है बल्कि उनके उज्जवल भविष्य का सपना भी साकार किया जा सकता है ।

... नीति, स्रोत – http://hi.vikaspedia.in/social-welfare/92894092493f92f93e901
... 2015 and National Career Service Portal 2015-16)
... न्यूज चैनलों के अस्पृश्य में लेखक आनंद प्रधान, पेज नंबर 60, संपादक सुभिता बाला, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली
... लोगों को मिलेगी बंपर नौकरियां, 6 दिसंबर 2017, स्रोत– https://hindi.news18.com/news/career/till-2022-media-and-...-will-generate-7-8-lakh-jobs-1186349.html

•••

JAN SANCHAR VIMARSH ■

जन संचार विमर्श

A BI-LINGUAL MEDIA RESEARCH JOURNAL

A Special Issue for INC on Divyangs and PMG: A Global Media Perspective

Sunday, 10th December, 2017
IIMC, JNU Campus

Chief Editor:
Dr. Sandeep Srivastava

Editors:
Dr. Dilip Kumar
Rahul Mittal
Anil K Jharotia

Co-Editors:
Dr. Suresh Chandra Nayak
Charu Chandra Pathak
Vipul Partap
Bharat Banga
Lalit Mohan

Published By:
ISHAAN ARTS AND PRODUCTION
Delhi - 110085 (India)